F.No. 23-1099/09 (WRO)

संत साहित्य में जीवनमूल्य
(हिन्दी और मराठी संतो के संदर्भ में)

A Minor Research Project

Submitted To

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

WESTERN REGIONAL OFFICE

GANESH KHIND (PUNE UNIVESITY)

PUNE – 411 007

By

Sou. Gaikwad S. A.

M.A. B.Ed., M.Phil

Lecturer in Hindi

Sangameshwar College, Solapur

SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

YEAR - 2009

१) प्रकल्प का शिर्षक (Project Title)

संत साहित्य में जीवनमूल्य

(हिन्दी और मराठी संतो के संदर्भ में)

२) प्रस्तावना (Introduction)

आज पूरे संसार में अशांति, हिंसा, भ्रष्टाचार, अत्याचार, अनास्था, संशय आदि का वातावरण है। मानव का बौद्धिक विकास तो हुआ है मगर उसका ह्दय संकुचित होता जा रहा है। ऐसे भयावह वातावरण में संवेदनशील व्यक्ति का ह्दय व्यथित होता है तथा भविष्य के प्रति आशंकित हो उठता है। इसका एकमेव कारण है - जीवनमूल्यों का ह्रास।

हमारे ऋषियों - मुनियों ने, संतो-सज्जनों ने जीवनमूल्यों के संस्कार हम पर किए थे। मगर १९ वी शताब्दि में उपभोक्तावादी प्रवृत्ति की ऐसी आँधी आई जिसने जीवनमूल्यों को उखाडकर फेंक दिया है। इन उखडे हुए जीवनमूल्यों को हमे हमारे ह्दय में फिर से गढना चाहिए जिससे वे पुन: जीवित हो उठेंगे। समूल उखडा हुआ वृक्ष कुछ दिनों मे सुखकर नष्ट हो जाता है परंतु उसकी जडें धरती में जम जाती है, उससे नया वृक्ष फिर से लहराने लगता है। सृष्टि के इस नियम पर मेरा विश्वास है। इसीलिए मैंने जीवनमूल्यों पर विचार करना आवश्यक समझा है।

मेरा शोध - प्रकल्प निम्नानुसार होगा (Origin of the Research Problem)

i) जीवनमूल्य : संकल्पना

मूल्य का अर्थ - नालंदा शब्दकोश में मूल्य का अर्थ है वह गुण अथवा तत्त्व जिसके कारण किसी वस्तु का मान या महत्त्व होता है।

मनुष्य के संदर्भ में ऐसे गुण या तत्त्व जिन्हे जीवन में उतारने पर जीवन का मान या मूल्य बद जाए, जीवनमूल्य है।

जीवनमूल्य संबंधी विद्वानों के विचार।

धार्मिक मूल्य - नैतिकमूल्य और जीवनमूल्य का संबंध।

ii) जीवन में मूल्यों की आवश्यकता

भारतीय संस्कृति में जीवन की ओर उदात्त दृष्टि से देखा गया है। जीवन को यज्ञ कहा है। इस यज्ञ में षडरिपुओं की आहुति देने से जीवन उदात्त बन जाता है। इसीलिए प्राचीन काल से धार्मिक और नैतिक शिक्षा के माध्यम से जीवनमूल्यों के संस्कार किए जाते थे।

मनुष्य में गुण-दोषों का मिश्रण होता है। गुणों का संवर्धन और दोषों का निर्मुलन होना आवश्यक है। रास्ते पर पडा संस्कारहीन पत्थर लोगों की ठोकरें खाता फिरता रहता है। उस पत्थर पर संस्कार कर जब उसे मूर्ति का रुप दिया जाता है तब लोग उसके सामने श्रद्धा से नतमस्तक होते है। संस्कारों से पत्थर का भविष्य बदल जाता है तो मानव जीवन निश्चित ही बदल सकता है। इस संदर्भ में हिन्दी के संत कवि रहीम निम्न दोहा विचारणीय है।

जो नर उत्तर प्रकृति का का कर सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग॥

युग परिवर्तन के साथ मूल्य बदलते है। देश, धर्म के अनुसार भी वे भिन्न हो सकते है। पर कुछ मूल्य शाश्वत होते है। स्थल, काल के अनुसार उनमें परिवर्तन नहीं होते। यही मूल्य व्यक्ति और समाज पर नियंत्रण रखते है। उनका मार्गदर्शन करते है। अतः हर युग में इन मूल्यों के संस्कार होना आवश्यक है।

iii) साहित्य और समाज

साहित्य और समाज का अट्ट संबंध है। समाज की उन्नति तभी संबंध है जब हमारा ह्दय विकसित और बुद्धि परिष्कृत होती है। इन दोनों के लिए साहित्य प्रभावशाली साधन है।

iv) संत - साहित्य

'संत' शब्द से अभिप्राय

नालंदा शब्दकोश में संत शब्द का अर्थ है -

१) साधु, संन्यासी या महात्मा

२) ईश्वर भक्त

हिन्दी साहित्य में संत से अभिप्राय तथा संत-परंपरा मराठी साहित्य में संत से अभिप्राय तथा संत-परंपरा संत साहित्य का महत्त्व

v) संत - साहित्य के आधारपर मैने निम्न जीवनमूल्य निर्धारित किए है

१) सत्य

२) अहिंसा

३) परोपकार

४) देशप्रेम

५) शील

६) सत्संग

७) समता

८) समय का महत्त्व

९) वाणी का महत्त्व

१०) श्रम प्रतिष्ठा

११) स्त्री विषयक दृष्टिकोण

१२) वैज्ञानिक मनोवृत्ती

vi) राष्ट्रीय पाठ्यक्रम

शिक्षा समाज - परिवर्तन का प्रभावी माध्यम है। सन १९८६ में तत्कालीन भारत सहकार ने पूरे देश के लिए एक समान राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति का आयोजन किया। उसमें दस बीज-घटक (Core-Elements) निश्चित किए। ये दस बीज-घटक हर राज्य के पाठ्यक्रम में अनिवार्य किए जिससे शालेय स्तर पर से ही विद्यार्थियों पर अच्छे संस्कार हो जाए। इन बीज घटकों के संकेत हमे संत-साहित्य में प्राप्त जीवनामूल्यों में मिलते है।

vii) जीवनमूल्य : समय की माँग

जीवनमूल्यों का महत्त्व कालातीत है। उसका महत्त्व भूतकाल में था, वर्तमान में है और भविष्य में भी रहेगा। क्यों कि किसी भी काल का मानव-समाज शांति-पूर्ण जीवन जीना चाहता है। शांतिपूर्ण वातावरण में ही संस्कृति विकसित होती है, समाज उन्नत होता है। दूरदर्शन और भ्रमणध्वनि के इस कलियुग में इन जीवनमूल्यों की अधिक आवश्यकता है। इन्ही मूल्यों से विश्वबंधुत्व की भावना निर्माण होगा और विश्व सच्चे अर्थ में एक देहात नहीं तो परिवार में

आंतरविद्याशाखेय संबंध (Interdisciplinary Relevance)

इस प्रकल्प के अंतर्गत वाङ्.मयीन, आध्यात्मिक, सामाजिक पहलुओं के अनुसार अध्ययन किया जाएगा।

३) उद्देश्य (Objectives)

मेरा शोध - प्रकल्प हिन्दी में है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। भारत का नागरिक हिन्दी भाषा को जानता है। अत: मेरा शोध प्रकल्प भारत के हर नागरिक तक पहुँच सकता है। इससे भारत का हर नागरिक जीवनमूल्यों का महत्त्व और उनकी आवश्यकता समझ सकेगा। इस तरह यह शोध - प्रकल्प राष्ट्रीय एकात्मक निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

मेरे शोध - प्रकल्प के विषय का महत्त्व धर्म, जाति, वर्ग देश से परे है। क्यों की किसी भी धर्म जाती, वर्ग, देश का मनुष्य आज जिस शांति की तलाश में है, वह इन्हीं जीवनमूल्यों पर आधारित है। इन्ही मूल्यों से विश्वबंधुत्व की भावना निर्माण होगी और विश्व सच्चे अर्थ में एक देहात नहीं तो परिवार में परिवर्तित होगा। जैसा कि संत ज्ञानेश्वर ने कहा है -

'हे विश्वचि माझे घर। ऐसी मती जगाची स्थिर।

किंबहुना चराचर। आपण जाहला ॥'

४) अध्ययन पद्धति (Methodology)

मेरा शोध - प्रकल्प ग्रंथालय - अध्ययन के अंतर्गत आता है। अत: इसके अध्ययन में मुझे ग्रंथो की सहायता होगी।

इसके अलावा संत-साहित्य में रुचि रखने वाले लोग, संत-साहित्य में जिन्होंने संशोधन किया हैं ऐसे संशोधक, विद्वान आदि के साथ मैं चर्चा करुंगी।

इसके साथ मेरा अध्ययन, मनन, चिंतन आदि के आधार पर यह शोध प्रकल्प पूर्ण होगा।

प्रसंगवश महत्त्वपूर्ण स्थलों की यात्रा भी होगी।